चतुर्विंशति तीर्थंकर तप

तीर्थंकरों की आराधना के लिए यह तप किया जाता है। इस तप में 24 दिन निरंतर एकासना करना है।

- 1. **12 प्रदक्षिणा (फेरी)** एवं **12 खमासमण** लगायें।
 - (अ) फेरी लगाते हुए निम्न दोहा बोलें परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान्। चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिन भाण।।
 - (ब) एक-एक फेरी लगाने के बाद निम्नलिखित पदों का क्रमशः उच्चारण करते जायें।

1.	अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
2.	पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
3.	दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
4.	चामर युगल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
5.	स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
6.	भामण्डल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
7.	देव दुंदुभी प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
8.	छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
9.	अपायापगमातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
10.	पूजातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
11.	वचनातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
12.	ज्ञानातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		

(स) प्रत्येक पद का उच्चारण करने के पश्चात् खमासमण देवें।

चतुर्विंशति तीर्थंकर तप

तीर्थंकरों की आराधना के लिए यह तप किया जाता है। इस तप में 24 दिन निरंतर एकासना करना है।

- 1. 12 प्रदक्षिणा (फेरी) एवं 12 खमासमण लगायें।
 - (अ) फेरी लगाते हुए निम्न दोहा बोलें परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान्। चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिन भाण।।
 - (ब) एक-एक फेरी लगाने के बाद निम्नलिखित पदों का क्रमशः उच्चारण करते जायें।

1.	अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
2.	पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
3.	दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
4.	चामर युगल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
5.	स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
6.	भामण्डल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
7.	देव दुंदुभी प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
8.	छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
9.	अपायापगमातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
10.	पूजातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
11.	वचनातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		
12.	ज्ञानातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः		

(स) प्रत्येक पद का उच्चारण करने के पश्चात् खमासमण देवें।

- 12 साथिया करके ऊपर 1 नग फल (केला, सेव, नाशपत्ती, श्रीफल, बादाम आदि) तथा 12 नग नैवेद्य (चक्की, मखाने, चीरोंजी, साकर आदि) यथाशक्ति चढ़ायें।
- 3. 12 लोगरस का **कायोत्सर्ग** करें।
- 4. **20 माला** फेरें (एकासणा के पहले 5 माला अवश्य फेरें)।

	1. 1/1		
1	श्री आदि नाथाय नमः	13	श्री विमल नाथाय नमः
2	श्री अजित नाथाय नमः	14	श्री अनंत नाथाय नमः
3	श्री संभव नाथाय नमः	15	श्री धर्म नाथाय नमः
4	श्री अभिनन्दन स्वामिने नमः	16	श्री शांति नाथाय नमः
5	श्री सुमति नाथाय नमः	17	श्री कुन्थु नाथाय नमः
6	श्री पद्मप्रभ स्वामिने नमः	18	श्री अर नाथाय नमः
7	श्री सुपार्श्व नाथाय नमः	19	श्री मल्लि नाथाय नमः
8	श्री चन्द्रप्रभ स्वामिने नमः	20	श्री मुनिसुव्रत स्वामिने नमः
9	श्री सुविधि नाथाय नमः	21	श्री निम नाथाय नमः
10	श्री शीतल नाथाय नमः	22	श्री नेमि नाथाय नमः
11	श्री श्रेयांस नाथाय नमः	23	श्री पार्श्व नाथाय नमः
12	श्री वासुपूज्य स्वामिने नमः	24	श्री महावीर स्वामिने नमः

- चैत्यवंदन तथा देववंदन करें।
- यथासमय पच्चक्खाण लें।
- जल लेने के पूर्व पच्चक्खाण पारने की क्रिया करें
 इरियावहियं क्रिया, जयउसामिअ का चैत्यवंदन, मुंहपत्ती पडिलेहण आदि।
- 2. **12 साथिया** करके ऊपर 1 नग फल (केला, सेव, नाशपत्ती, श्रीफल, बादाम आदि) तथा 12 नग नैवेद्य (चक्की, मखाने, चीरोंजी, साकर आदि) यथाशक्ति चढायें।
- 3. 12 लोगस्स का **कायोत्सर्ग** करें।
- 4. **20 माला** फेरें (एकासणा के पहले 5 माला अवश्य फेरें)।

	, .		
1	श्री आदि नाथाय नमः	13	श्री विमल नाथाय नमः
2	श्री अजित नाथाय नमः	14	श्री अनंत नाथाय नमः
3	श्री संभव नाथाय नमः	15	श्री धर्म नाथाय नमः
4	श्री अभिनन्दन स्वामिने नमः	16	श्री शांति नाथाय नमः
5	श्री सुमति नाथाय नमः	17	श्री कुन्थु नाथाय नमः
6	श्री पद्मप्रभ स्वामिने नमः	18	श्री अर नाथाय नमः
7	श्री सुपार्श्व नाथाय नमः	19	श्री मल्लि नाथाय नमः
8	श्री चन्द्रप्रभ स्वामिने नमः	20	श्री मुनिसुव्रत स्वामिने नमः
9	श्री सुविधि नाथाय नमः	21	श्री निम नाथाय नमः
10	श्री शीतल नाथाय नमः	22	श्री नेमि नाथाय नमः
11	श्री श्रेयांस नाथाय नमः	23	श्री पार्श्व नाथाय नमः
12	श्री वासुपूज्य स्वामिने नमः	24	श्री महावीर स्वामिने नमः

- चैत्यवंदन तथा देववंदन करें।
- यथासमय पच्चक्खाण लें।
- जल लेने के पूर्व पच्चक्खाण पारने की क्रिया करें
 इरियावहियं क्रिया, जयउसामिअ का चैत्यवंदन, मुंहपत्ती पिंडलेहण आदि।